।। धुआं - धुआं ।।

(1) गुफ़्तगू ख़त्म हुई, कारवाँ आगे बढ़ गया,
देखा-सुना सब नज़ारा, अब हुआ धुआं-धुआं।

(2) राख बिखरी ज़मीं पर, मैं आज़ाद हो गया ,
निकला मैं अंगार से, अब आसमान का हो गया।

(3) मुझको तो निकाल दिया तूने अपने ज़हन से,
लेकिन जो दाग छूट गए पीछे, उसका क्या हुआ?

(4) मेरे मदहोश झरोखे से ज़िंदगी को न परख,
इसके छंटते ही हक़ीकत वार करेगी, याद रख।

(5) मुझसे दिल्लगी की तो रौशनी छटपटायेगी,
उससे जो तूने हाथ मिलाया तो मैं धुआं-धुआं।

(6) वहम है तेरा कि धूमन में शान झलकती है,
दम्भ की नुमाइश से तूने क्या हासिल किया?

(7) काश कि तू कशों के पाश को समझ पाता,
जिन्दा लाशों की अर्थियों का बोझ जान पाता।

(8) याद रख, तू मुझसे ज़्यादा दूर नहीं है समीरा,
कुछ और सावन, फिर तू और मैं, दोनों धुआं-धुआं।

समीर खांडेकर
विश्व तंबाकू निषेध दिवस 2021
आय. आय. टी. कानपुर
मई ३१, २०२१